झूठी गवाही - नाजाइज मदद और तरफदारी

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोटः- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

झूठी गवाही

अबू दाउद, रावी हज़रत खरीम बिन फातिक रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने सुब्ह की नमाज़ पढाई, और जब लोगों की तरफ रूख फेरा तो बैठे रहने की बजाए आप सीधे खडे हो गए और तीन बार फरमाया- झूठी गवाही देना और शिर्क करना दोनों बराबर के गुनाह है, फिर आपने पढा फन्तनिबुर्रिजसा आखिर तक, (तो तुम नापाकी यानी बुतों से दूर रहो और झूठी बात कहने से दूर रहो, और अल्लाह की तरफ ध्यान लगा लो, शिर्क छोड कर तौहीद अपनाओ).

रसूलुल्लाहﷺ ने सूरह हज की जो आयत/30 पढी, उस में "कौलज़्ज़ूर" का लफ्ज़ आया है जिस्का मतलब है झूठ

कहना, और झूठ बोलना हर जगह बुरा है, चाहे अदालत के, अन्दर हाकिम के सामने बोला जाए या किसी दूसरी जगह. देखिये झूठी गवाही कितना बडा गुनाह है लेकिन मुसलमानों की निगाह में ये गुनाह अब गुनाह नहीं रहा बल्की "फन" बन गया है, उन्के बीच वो लोग बेवकूफ समझे जाते है जो अदालत में अपने ईमान के दबाव से सच्ची गवाही देने की हिम्मत कर बैठते है.

नाजाइज़ मदद और तरफदारी

{१} मिश्कात, रावी हज़रत अबू उमामा रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- कयामत के दिन सब्से बुरे हाल में वो शख्स होगा जिसने दुसरों की दुनिया बनाने के लिए अपनी आखिरत बरबाद कर ली. की रिवायत का खुलासा-

{२} अबू दाउद, रावी हज़रत जबीर बिन मुअतम रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की वो शख्स हम्मे से नहीं है जो असबिय्यत की दावत दे, और वो शख्स भी हम्मे से नहीं है जो असबिय्यत की बुनियाद पर जंग करे, और हम्मे से वो भी नहीं

है जो असबिय्यत की हालत में मरे. असबिय्यत का मतलब है "मेरी अपनी कौम, चाहे वो हक पर हो या बातिल पर" तो इस नज़रिए की दावत देना और इस नज़रिए की बुनियाद पर जंग करना और इसी जेहनियत पर मरना मुसलमान का काम नहीं है.

{३} मिश्कात, रावी हज़रत अबू फसीला रदी; मैने रसूलुल्लाहﷺ से पूछा की अपने लोगों से मुहब्बत करना क्या असबिय्यत है? आपने फरमाया- नहीं, बल्की असबिय्यत ये है की आदमी जुलम के मामले में अपनी कौम का साथ दे.

{४} अबू दाउद, रावी हज़रत इबने मसउद रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- जो शख्स किसी नाजाइज़ मामले में अपनी कौम की मदद करता है तो उस्की मिसाल ऐसी है जैसे की कोई उँट कुएं में गिर रहा हो और ये उस्की दुम पकड कर लटक गया हो तो ये भी उस्के साथ जा गिरा.